चन्द्रगुप्त मौर्य – ऐतिहासिक महापुरुष

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
महामंत्री – प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन
संयुक्त मंत्री – अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

भगवान् महावीर के परिनिर्वाण (ई.पू. 527) के पश्चात् लगभग 162 वर्षों तक श्रुत-परम्परा सुव्यवस्थित रही, परन्तु बाद में उसमें ह्रास प्रारम्भ हो गया। महावीर के निर्वाण दिवस पर गौतम गणधर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ और उनका निर्वाण ई.पू. 515 में हुआ। उनके पश्चात् सुधर्मा स्वामी (निर्वाण ई.पू. 503) तथा फिर जम्बू-स्वामी (निर्वाण ई.पू. 465) अन्तिम अनुबद्ध केवली हुए।

इसके बाद अंग एवं पूर्व -साहित्य के ज्ञाताओं की परम्परा ई .पू. 365 से ई. 38 तक चली, जिसमें अन्तिम आचार्य लोहाचार्य माने जाते हैं। इस काल में श्रुतज्ञान का ह्रा स हुआ, किन्तु एकदेशीय संरक्षण बना रहा। विशाखनन्दी इस परम्परा के प्रारम्भिक आचार्य थे। आचार्य गोवर्धन ने अपने निमित्तज्ञान से भद्रबाहु को भावी श्रुतकेवली पहचानकर उन्हें शिक्षित किया। यही भद्रबाहु आगे चलकर जैन परम्परा के अन्तिम श्रुतकेवली के रूप में प्रसिद्ध हुए।

चन्द्रगुप्त मौर्य : ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं जैन परंपरा के आलोक में एक अध्ययन - चन्द्रगुप्त मौर्य भारतीय इतिहास के प्रथम ऐसे सम्राट माने जाते हैं, जिन्होंने एक विशाल, संगठित और सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना की। मौर्य साम्राज्य ने राजनीतिक एकता और केंद्रीय प्रशासन की नींव रखी। आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) ने उन्हें शिक्षा एवं प्रशिक्षण देकर नंद शासक धनानंद के शासन का अंत कराया। नंद वंश के पतन के बाद उन्होंने लगभग 321 ई.पू. से 297 ई.पू. तक शासन किया।

उनके समय यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ भारत आया, जिसने 'इंडिका' में उन्हें शक्तिशाली शासक बताया। विष्णु पुराण सहित अन्य ग्रंथों में भी उनका उल्लेख मिलता है।

जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया और आचार्य भद्रबाहु के सान्निध्य में अपने पुत्र बिंदुसार को राज्य सौंपकर श्रवणबेलगोला चले गए। वहाँ चंद्रगिरि पर्वत पर मुनि जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने संलेखना द्वारा देह त्याग किया, जो उनके वैराग्य और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक है।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना का महत्त्व– मौर्य साम्राज्य की स्थापना भारतीय इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने राजनीतिक विखंडन के युग का अंत कर एक सशक्त केंद्रीय शासन की नींव रखी। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित यह भारत का प्रथम सुव्यवस्थित और विशाल साम्राज्य था। नंद वंश के पतन के पश्चात् मौर्य शासन ने प्रशासनिक एकरूपता, सुदृढ़ सेना और स्पष्ट राज्य-नीति के माध्यम से भारत को एकता के सूत्र में बाँधा, जिससे आंतरिक अराजकता पर नियंत्रण हुआ और विदेशी आक्रमणों का प्रतिरोध संभव हुआ।

इस साम्राज्य का प्रभाव प्रशासन, अर्थव्यवस्था और समाज पर भी पड़ा। केंद्रीकृत शासन, सुव्यवस्थित कर-प्रणाली, जनकल्याणकारी नीतियाँ और विधि-व्यवस्था ने एक सुदृढ़ राज्य की स्थापना की। इसी साम्राज्य में आगे चलकर अशोक जैसे शासक हुए, जिनके द्वारा धम्म, अहिंसा और नैतिक मूल्यों का प्रसार हुआ। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास में स्थिरता और विकास की आधारशिला सिद्ध हुआ।

2. जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन(विभिन्न मत)

- जन्मकाल (विभिन्न मत) – चन्द्रगुप्त मौर्य के जन्मकाल और जीवन परिचय के संबंध में विभिन्न मत हैं। यहाँ उन्हें उल्लिखित कर रहे हैं –
- विष्णुपुराण और मुद्राराक्षस (उपोद्घात) के आधार पर उसे राजा नन्द की मुरा नाम की शूद्रा दासी या वृषल[1] (धर्मघाती जाति की) पत्नी से उत्पन्न कहा है।
- कथासरित्सार, कौटिल्य अर्थशास्त्र और बौद्ध-साहित्य के आधार पर चन्द्रगुप्त को क्षत्रिय मानते हैं।
- ग्रीक इतिहासकारों ने चन्द्रगुप्त को सैण्ड्रोकोट्टोम के नाम से स्मरण किया है।
- सर विलियम जोन्स ने कहा – ग्रीक-इतिहासकारों का सैण्ड्रोकोट्टोम ही मौर्यवंशी चन्द्रगुप्त हो सकता है।
- प्राकृत, संस्कृत और कन्नड़ के जैन साहित्य में एवं शिलालेखों में मौर्य चन्द्रगुप्त का परिचय बड़े ही आदर के साथ दिया गया है।
- तिलोयपण्णत्ति में लिखा है –

मउडधरेसुं चरिमो जिणदिक्ख धरिद चंदगुत्तो य।
तत्तो मउडधरा दुप्पव्वज्जं णेव गेण्हंति।।4/1481

- मुकुटधारी राजाओं में अन्तिम राजा चन्दगुप्त मौर्य ही था, जिसने जिनदीक्षा धारण की। उसके बाद कोई मुकुटधारी राजा दीक्षित नहीं हुआ।

- इतिहासवेत्ता राईस डेविड्स का निम्न कथन पठनीय है – चूँकि चन्द्रगुप्त जैन धमा्रनुयायी हो गया था, इसी कारण जैनेतरों द्वारा वह अगली 10 शताब्दियों तक इतिहास में उपेक्षित ही बना रहा।
- इतिहासकार टॉमस ने तो यहाँ तक लिखा है कि मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त जैन समाज के महापुरुष थे।
- मेगास्थानीज के विवरणों से भी यह विदित होता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विरोध में श्रमणों (जैनों) के उपदेशों को स्वीकार किया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य मौर्यपुत्र थे।
- यूनानी इतिहासकारों द्वारा प्रतिपादित भारतीय काल-संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में हम जानते हैं कि आठवें नन्द ने 451 ई.पू. में कलिंग देश पर आक्रमण किया था। इस बात की पुष्टि खारवेल प्रशस्ति नाम से विख्यात अभिलेख से हो जाती है। इस प्रकार जैन-इतिहास से जुड़े हुए मौर्यानन्द को हम मौर्यवंश का प्रथम पुरुष मानते हैं।
- कुछ इतिहासकार मानते हैं कि मौर्यवंश की स्थापना नंदवंश में से आठवें नन्द मौर्यनन्द ने की।
- मौर्यवंश की स्थापना के संदर्भ मुद्राराक्षस नामक संस्कृत नाटक से भी ज्ञात होता है।

आनन्दहेतुमपि देवमपास्य नन्दं,
सक्तासि किं कथय वैरिणि मौर्यपुत्रे।
दानाम्बुराजिरिव गन्धगजस्य नाशे,
ततैव किं न चपले प्रलयं गतासि।

अर्थात् हे चंचला लक्ष्मी! जो नंद राजा तुम्हारे लिए आनंद का कारण था, उसे छोड़कर तुम मौर्यपुत्र (चन्द्रगुप्त) में क्यों आसक्त हो गई हो ? जैसे मदोन्मत्त हाथी के नाश में उसके दान (मद) से बहने वाली जल-धारा भी उसी के साथ नष्ट हो जाती है, वैसे ही क्या तुम भी उसके (नंद के) विनाश के साथ नष्ट नहीं हो गई ?

- मौंयनन्द के पुत्र एवं चन्द्रगुप्त के पिता के रूप में पूर्वनन्द का उल्लेख मनोरंजक भी है और अ भिनंदनीय भी है।

(क) **पूर्वनन्दसुतं कुर्यात् चन्द्रगुप्तं हि भूमिपम्।**

अर्थात् " चन्द्रगुप्त को पूर्व नन्द का पुत्र बनाकर ही राजा बनाए।"

(ख) योग वंदे यशःशेषे पूर्वनन्दसुतस्ततः।
चन्द्रगुप्तः कृतो राजा चाणक्येन महौजसा।।

अर्थात् जब नन्द का केवल यश ही शेष रह गया (अर्थात् नन्द वंश का पतन हो गया), तब महान तेजस्वी चाणक्य ने युक्ति के द्वारा चन्द्रगुप्त को 'पूर्व नन्द का पुत्र' बताकर राजा बना दिया।

महास्थविर का महाप्रयाण वीर-संवत् 170=357 ई. पू. में हुआ था। उस समय तक चन्द्रगुप्त पदासीन नहीं हुआ था। पौराणिक और जैन-साक्ष्यों से हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं, चन्दग्रुप्त मौर्य 342 ईसवी पूर्व में अभिषिक्त हुए थे। हालांकि आधुनिक इतिहासकार चन्दग्रुप्त मौर्य के लिए 322-21 ई.पू. का समय बताते हैं। अतः चन्दग्रुप्त मौर्य का समय 342-321 ई.पू. मानने में कोई विप्रतिपत्ति शेष नहीं रह जाती है। पौराणिक साक्ष्यों के आधार पर एवं जैन पट्टावलियों के अनुसार –

	त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति	हरिवंशपुराण	तित्थोगालीपइन्नय	विविध तीर्थकल्प
राजा पालक =	60	60	60	60
नंद राज्य =	155	155	155	155
	215	215	215	215

अर्थात् वीर निर्वाण संवत् से 215 वर्ष पश्चात् चन्द्रगुप्त मौर्य का उदय हुआ।

वीर निर्वाण संवत् में आए हुए निर्वाण शब्द के संबंध में – कोशग्रन्थानुसार नानार्थक निवा्रण का अर्थ केवल मोक्ष ही नहीं है बल्कि केवलज्ञान को भी निर्वाण कहा गया है। इसके संबंध में कहा है -

कैवल्य निर्वाणं निःश्रेयसममृतमक्षरं ब्रह्म।
अपुनर्भवोऽपवर्गः मुक्तिर्मोक्षो महानन्दः।। हलायुधकोश124

कैवल्य, निर्वाण, परम कल्याण, अमर और अविनाशी ब्रह्म– जहाँ पुनर्जन्म नहीं होता, वही अपवर्ग, वही मुक्ति, वही मोक्ष और वही परम आनंद है। यह श्लोक भारतीय दर्शन में परम लक्ष्य को विभिन्न नामों से स्पष्ट करता है। भिन्न-भिन्न दर्शनों में जिसे कैवल्य (सांख्य–योग), निर्वाण (जैन–बौद्ध), ब्रह्मसाक्षात्कार (वेदान्त), अपवर्ग (न्याय–वैशेषिक) और मोक्ष/मुक्ति (सामान्य दर्शन) कहा गया है–वह वस्तुतः एक ही परम अवस्था है।

अर्थात् हम भगवान के केवलज्ञान के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य के समय का आकलन करते हैं तो पाते हैं कि भगवान महावीर स्वामी को 42 वर्ष की आयु में केवलज्ञान हुआ था। वह वर्ष 599-42=557 ई.पू. का था, सो 557-215= 342 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य का मगधसम्राट् के रूप में अभ्युदय हुआ।

आचार्य भद्रबाहु स्वामी और चन्द्रगुप्त मौर्य – सम्राट् चन्द्रगुप्त का जैन इतिहास में आदरणीय स्थान है श्रवणबेलगोल के चन्द्रगिरि से प्राप्त अभिलेख इस कृति के सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। इनमें पार्श्वनाथ वसदि की दायीं ओर शिला पर उत्कीर्ण शिलालेख अनेक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें प्रथम दो पंक्तियों में वर्द्धमान महावीर के शासन की चर्चा है।

इसके पश्चात् उक्त अभिलेख को तीसरी और चतुर्थ पंक्ति में गौतम गणधर के परवर्ती आचार्यों का नामोल्लेख है। पाँचवीं पंक्ति में भद्रबाहु स्वामी के बारह वर्षीय विषमकाल ज्ञात किये जाने पर उत्तर पथ से दक्षिण पथ की ओर प्रस्थान करने का उल्लेख है। छठी पंक्ति में आचार्य प्रभाचन्द्र का कटवप्र आगमन, सातवी पंक्ति में तत्कालीन कटवप्र पर्वत की स्थिति, आठवीं पंक्ति में समाधि चर्चा, संघ परित्याग कर मात्र एक शिष्य के साथ आना और नौवीं पंक्ति में सात सौ मुनियों के साथ समाधि ।

आचार्य चाणक्य , उनसे चन्द्रगुप्त की भेंट और मार्गदर्शन — प्लेटो एवं अरस्तू जैसे पाश्चात्य दार्शनिकों के जीवन पर प्रामाणिक एवं सुव्यवस्थित विवरण उपलब्ध हैं, जबकि आचार्य चाणक्य के जीवन-वृत्त से सम्बन्धित कथाएँ विभिन्न परम्पराओं में बिखरी और कई बार परस्पर विरोधी रूप में मिलती हैं। इससे उनके ऐतिहासिक जीवन का निर्धारण जटिल हो जाता है।

वैदिक, बौद्ध और जैन—तीनों परम्पराएँ चाणक्य को एक विलक्षण ब्राह्मण विद्वान मानती हैं तथा इस तथ्य पर एकमत हैं कि उन्होंने नन्द शासक धननन्द को हटाकर चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के सिंहासन पर स्थापित किया। बौद्ध और जैन परम्पराओं में चाणक्य-कथाओं में कई समानताएँ भी मिलती हैं। यद्यपि जैनेतर कथाओं पर पर्याप्त शोध हुआ है, किन्तु जैन परम्परा में सुरक्षित चाणक्य-कथाएँ अपेक्षाकृत उपेक्षित रही हैं, जबकि उनमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संकेत निहित हैं। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर चाणक्य के संबंध में मुख्यतः दो प्रकार के कथन प्राप्त होते हैं।

नन्द शासकों का शासन - भारतीय इतिहास के निर्माण में मगध तथा उसके नन्द वंश का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि उनके वंशानुक्रम एवं राज्यकाल को लेकर मतभेद हैं, फिर भी उन्होंने प्राचीन भारतीय इतिहास को क्रमबद्ध करने का ठोस आधार प्रदान किया। मगध का इतिहास ही व्यापक रूप से सम्पूर्ण भारत के राजनीतिक इतिहास का प्रतिनिधि बन जाता है।

नन्द राजाओं की तीन प्रमुख विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं —पहली, उन्होंने एक विशाल क्षत्रियेतर साम्राज्य की स्थापना की; दूसरी, ब्राह्मण-धर्म की उपेक्षा कर स्वतंत्र राजनीतिक नीति अपनाई; और तीसरी, उत्तर-पूर्वी भारत के बिखरे राज्यों को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया।

इन्हीं कारणों से पुराणकारों ने भी उन्हें "अतिबल" कहा। उनके पुरुषार्थ से मगध साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में गंगा , उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल तक हु आ। इसी साम्राज्यिक शक्ति के प्रभाव से यवनराज सिकन्दर पंजाब से आगे नहीं बढ़ सका।

चन्द्रगुप्त–चाणक्य की रणनीति- चन्द्रगुप्त– चाणक्य की रणनीति भारतीय इतिहास की अत्यंत सफल राजनीतिक–सैन्य योजना मानी जाती है। उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को संगठन, अनुशासन और यथार्थवादी कूटनीति का प्रशिक्षण दिया। पहले आंतरिक असंतोष और सीमांत शक्तियों को संगठित कर आधार मजबूत किया गया, फिर नन्द शासन की कमजोरियों का लाभ उठाया गया। जनसमर्थन, गुप्तचर तंत्र और चरणबद्ध आक्रमण इस योजना के प्रमुख आधार थे।

रणनीति का दूसरा पक्ष विजय के बाद सुदृढ़ शासन-व्यवस्था स्थापित करना था। अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार कर-प्रणाली, सेना, न्याय और जासूसी तंत्र को संगठित किया गया। दण्ड और दया के संतुलन तथा समयानुकूल निर्णयों ने मौर्य शासन को स्थिर बनाया।

मगध पर अधिकार इसी सुविचारित योजना का परिणाम था। धनानन्द की अलोकप्रियता और कठोर शासन के विरुद्ध जनअसंतोष को संगठित कर चाणक्य ने गुप्तचरों के माध्यम से उसकी कमजोरियों का अध्ययन किया और चन्द्रगुप्त के लिए समर्थन तैयार किया।

ऐतिहासिक महत्त्व- चन्द्रगुप्त मौर्य का ऐतिहासिक महत्त्व **अखंड भारत की अवधारणा** के साकार रूप में प्रकट होता है। उन्होंने छोटे–छोटे जनपदों और शक्तियों को एक राजनीतिक इकाई में संगठित कर उत्तर-पश्चिम से पूर्व और मध्य भारत तक एकीकृत शासन स्थापित किया। यह भारत के इतिहास में पहली बार था जब व्यापक भूभाग एक केंद्रीय सत्ता के अधीन आया, जिससे राजनीतिक स्थिरता, सुरक्षित सीमाएँ और सांस्कृतिक–आर्थिक समन्वय संभव हुआ। इस एकीकरण ने भारतीय उपमहाद्वीप में राष्ट्र-बोध की नींव रखी।

सशक्त केंद्रीय शासन की नींव रखते हुए चन्द्रगुप्त ने प्रशासन, सेना, न्याय और अर्थव्यवस्था को एक सुव्यवस्थित ढाँचे में बाँधा। चाणक्य के मार्गदर्शन और अर्थशास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित यह व्यवस्था अनुशासन, दक्षता और लोककल्याण पर केंद्रित थी। **भारतीय इतिहास में उनका स्थायी योगदान** यह रहा कि उन्होंने राज्य को केवल शक्ति का प्रतीक नहीं, बल्कि सुव्यवस्था और जनहित का साधन बनाया–जिसके आधार पर मौर्य साम्राज्य दीर्घकाल तक सुदृढ़ रहा और भारत विश्व इतिहास में एक संगठित शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

उपसंहार- चन्द्रगुप्त मौर्य का व्यक्तित्व शक्ति, नीति और वैराग्य—तीनों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। एक ओर उन्होंने युद्ध, कूटनीति और संगठन के माध्यम से विशाल साम्राज्य की स्थापना की, तो दूसरी ओर जीवन के उत्तरार्द्ध में सांसारिक वैभव का त्याग कर आध्यात्मिक मार्ग अपनाया। उनकी विरासत केवल विजयों तक सीमित नहीं है; सुव्यवस्थित प्रशासन, सुरक्षित सीमाएँ, सुदृढ़ अर्थव्यवस्था और अनुशासित शासन-प्रणाली उनके स्थायी योगदान हैं, जिन पर आगे चलकर मौर्य साम्राज्य का उत्कर्ष संभव हुआ।

एक **आदर्श शासक एवं राष्ट्र निर्माता** के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य का मूल्यांकन इस तथ्य से होता है कि उन्होंने बिखरे हुए भारत को एकीकृत कर सशक्त केंद्रीय राज्य की नींव रखी। चाणक्य के मार्गदर्शन और अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने शासन को लोककल्याण से जोड़ा। सत्ता और साधना—दोनों क्षेत्रों में उनका आदर्श आचरण उन्हें भारतीय इतिहास में न केवल एक महान सम्राट, बल्कि एक महान राष्ट्र-निर्माता के रूप में अमर बनाता है।

सन्दर्भ सूची -

- [Epigraphia Carnatica Vol. 2, शिलालेख, प्रथम पृष्ठ (34)
- महापुराण भाग प्रथम- 2.141-143
- पं परमानन्द शास्त्री जैनधर्म का प्राचीन इतिहास भाग द्वित्तीय
- जैन शिलालेख संग्रहः भाग प्रथम, प्रकाशक श्री मणिकचन्द्रदि जैन ग्रन्थमाला समिति पृष्ठ 210, लेख क्रमांक- 108, पृष्ठ 210
- पं. परमानन्द शास्त्री, जैनधर्म का प्राचीन इतिहास, भाग द्वितीय, पृष्ठ 49
- आचार्य चाणक्य से भेंट और मार्गदर्शन
- प्राचीन भारतीय ग्रंथ
- सोमदेव – कथासरित्सागर– संपादकः पं. दुर्गाप्रसाद एवं केशव रामचंद्र पारस निर्णयसागर प्रेस, बंबई
- विष्णु पुराण
- मौर्य वंश वर्णन, गीता प्रेस, गोरखपुर, (चन्द्रगुप्त मौर्य का ऐतिहासिक उल्लेख)
- मुद्राराक्षस – विशाखदत्त (चाणक्य–चन्द्रगुप्त–नंद वंश का राजनीतिक आख्यान)
- महावंश (पाली बौद्ध ग्रंथ) अनुवादः विल्हेल्म गीगर
- वृषो हि भगवान् धर्मो यस्तस्य कुरुते वृषलम्। महाभारत 12/50/35
- तिलोयपण्णत्ति 4/1481
- बुद्धिष्ट इण्डिया पृ. 164
- जैनिज्म ऑर अर्ली फैथ ऑफ अशोक पृ. 23
- वीर निर्वाण संवत् और जैन काल गणना – मुनि कल्याण विजय, पृष्ठ 166

- जैन काल-गणना-विषयक प्राचीन परम्परा (हितवन्त थेरावली) से ज्ञात होता है कि वीर निर्वाण संवत् 149=378 ई.पू. में आठवें नंद ने कलिंग पर चढ़ाई की थी। यह विश्वनीय नहीं है। कारण 430-342 ई.पू. में मगध पर नवम नंद शासन कर रहा था। अलवत्ता यदि यह संख्या वीन जन्म से मान ली जाए तो यथार्थपरक हो भी सकती है। यथा 599-149=450 ई.पू. में आठवें नन्द ने कलिंग पर आक्रमण किया होगा।
- मुद्राराक्षस/2/6
- मुद्राराक्षस
- इसका तात्पर्य है कि राजनीतिक वैधता स्थापित करने के लिए चन्द्रगुप्त को नन्द वंश से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए, ताकि जनता और दरबार में उसका राजसिंहासन पर अधिकार स्वीकार्य हो सके। *मुद्राराक्षस* में यह विचार बार-बार उभरता है कि सत्ता परिवर्तन केवल बल से नहीं, बल्कि वंशीय एवं सामाजिक स्वीकृति से स्थायी बनता है।
- कथासरित्सार 1,4/119
- (क)चौदस पुव्वछेदो वरिससते सत्तरे विणिदिट्ठो।
- साहिम्मि थूलभद्दे अन्ने य इमे भवे भावा।। तित्थोगाली पइन्नय
- (क)आर्य सुधर्मा 20, जम्बू 40, प्रभाव 11, शय्यंभव 23, यशोभद्र 50, संभूति विजय 8, भद्रबाहु 14 = 170, 527-170=357 ई. पू.का वर्ष।